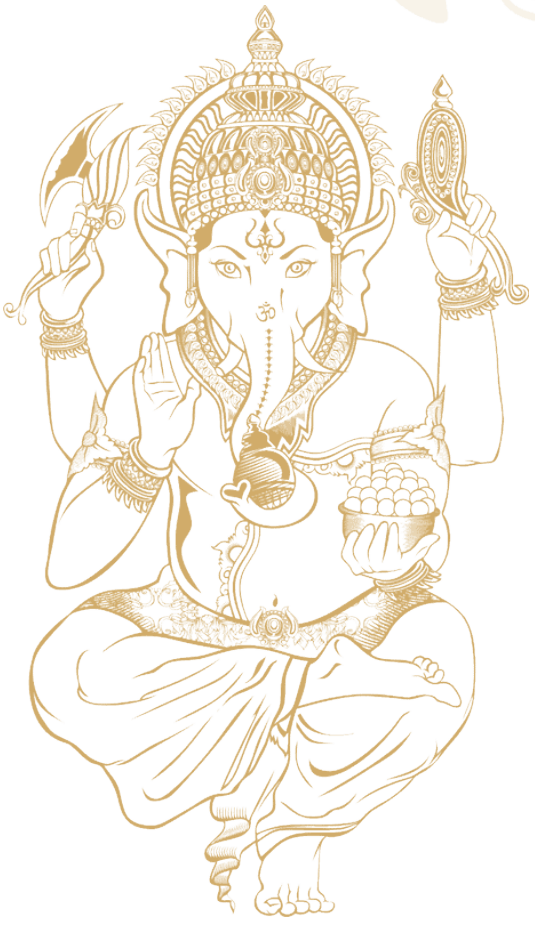

# Mr. Shriyank

# Ms. Rakhi sharma

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120174806

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | स्त्रीलिंग |
| 24/03/1995 | जन्म तिथि | 10/08/1995 |
| शुक्रवार | दिन | गुरुवार |
| घंटे 17:17:00 | जन्म समय | 10:35:50 घंटे |
| घटी 27:49:40 | जन्म समय(घटी) | 12:16:30 घटी |
| India | देश | India |
| Katni | स्थान | Itarsi |
| 23:47:00 उत्तर | अक्षांश | 22:39:00 उत्तर |
| 80:29:00 पूर्व | रेखांश | 77:48:00 पूर्व |
| 82:30:00 पूर्व | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:08:04 | स्थानिक संस्कार | -00:18:48 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 06:09:07 | सूर्योदय | 05:53:32 |
| 18:20:20 | सूर्यास्त | 18:54:29 |
| 23:47:36 | चित्रपक्षीय अयनांश | 23:47:55 |

| विंशोत्तरी | | अंश | राशि | ग्रह | राशि | अंश | विंशोत्तरी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्र 12वर्ष 10मा 24दि | | 25:53:37 | सिंह | लग्न | कन्या | 26:51:41 | चन्द्र 5वर्ष 7मा 18दि | |
| मंगल | | 09:34:42 | मीन | सूर्य | कर्क | 23:19:37 | राहु | |
| 16/02/2024 | | 18:03:57 | धनु | चंद्र | मक | 15:49:13 | 29/03/2008 | |
| 16/02/2031 | | 19:22:20 | कर्क व | मंगल | कन्या | 18:12:09 | 29/03/2026 | |
| मंगल | 15/07/2024 | 20:53:53 | कुंभ | बुध | सिंह | 06:34:08 | राहु | 10/12/2010 |
| राहु | 02/08/2025 | 21:29:21 | वृश्चि | गुरु | वृश्चि | 11:49:07 | गुरु | 05/05/2013 |
| गुरु | 09/07/2026 | 01:45:16 | कुंभ | शुक्र | कर्क | 20:21:18 | शनि | 11/03/2016 |
| शनि | 18/08/2027 | 23:27:44 | कुंभ | शनि व | कुंभ | 29:58:52 | बुध | 28/09/2018 |
| बुध | 14/08/2028 | 12:16:05 | तुला व | राहु व | तुला | 05:31:50 | केतु | 16/10/2019 |
| केतु | 10/01/2029 | 12:16:05 | मेष व | केतु व | मेष | 05:31:50 | शुक्र | 16/10/2022 |
| शुक्र | 12/03/2030 | 05:57:40 | मक | हर्ष व | मक | 03:56:10 | सूर्य | 10/09/2023 |
| सूर्य | 18/07/2030 | 01:25:58 | मक | नेप व | धनु | 29:44:15 | चन्द्र | 11/03/2025 |
| चन्द्र | 16/02/2031 | 06:41:39 | वृश्चि व | प्लूटो | वृश्चि | 04:01:07 | मंगल | 29/03/2026 |

**लग्न-चलित**

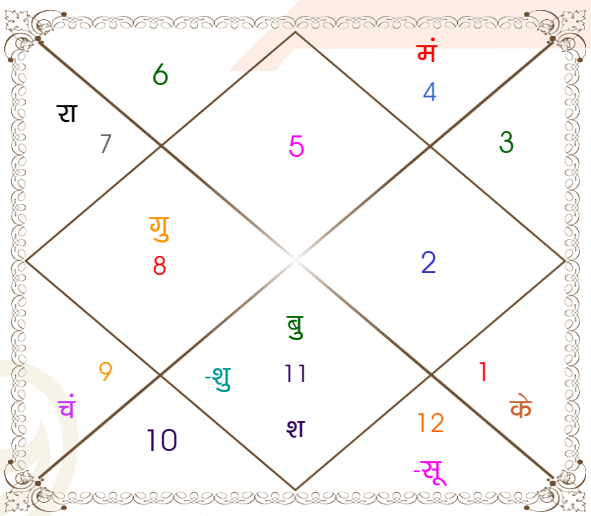


**लग्न-चलित**

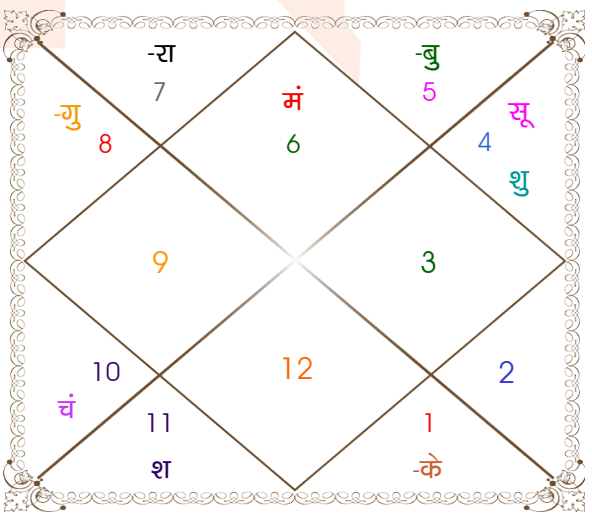

## अष्टकूट गुण सारिणी

| कूट | वर | कन्या | अंक | प्राप्त | दोष | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | क्षत्रिय | वैश्य | 1 | 1.00 | -- | जातीय कर्म |
| वश्य | चतुष्पाद | जलचर | 2 | 1.00 | -- | स्वभाव |
| तारा | मित्र | विपत | 3 | 1.50 | -- | भाग्य |
| योनि | वानर | वानर | 4 | 4.00 | -- | यौन विचार |
| मैत्री | गुरु | शनि | 5 | 3.00 | -- | आपसी सम्बन्ध |
| गण | मनुष्य | देव | 6 | 5.00 | -- | सामाजिकता |
| भकूट | धनु | मकर | 7 | 0.00 | हाँ | जीवन शैली |
| नाड़ी | मध्य | अन्त्य | 8 | 8.00 | -- | स्वास्थ्य/संतान |
| कुल : | | | 36 | 23.50 | | |

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

डतण् ैतपलंदा  का वर्ग सर्प है तथा डेण् तीप ्ैतउं  का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण् ैतपलंदा  और डेण् तीप ्ैतउं  का मिलान औसत है।

### मंगलीक दोष मिलान

डतण् ैतपलंदा  मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण् ैतपलंदा  कि कुण्डली में  द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

**भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।**

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल  डतण् ैतपलंदा  कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण् तीप ्ैतउं  मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।**
**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण तींपर्ोंतउं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।**
**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतर्ण्ौतपलंदा कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतर्ण्ौतपलंदा तथा डेण तींपर्ोंतउं में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।